उमर फारूक़ के जीवन की कुछ झलकियाँ

[हिन्दी]

لمحات من سيرة عمر الفاروق رضي الله عنه

[اللغة الهندية]

संकलन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

عطاء الرحمن ضياء الله

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة بمدينة الرياض

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1430 - 2009

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على المبعوث رحمة للعالمين، نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد:

अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण धर्म इस्लाम के सन्देश को अपने बन्दों तक पहुँचाने के लिए अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चयन किया, और आप की संगति के लिए ऐसे साथियों (अस्हाब) को चुना जो ईश्दूतों के बाद सर्व श्रेष्ठ मनुष्य हैं, इस उम्मत के सबसे अधिक नेक दिल, सब से अधिक गहरे ज्ञान वाले, सबसे उचित कार्य करने वाले और तकल्लुफ से अति दूर हैं। जिन्हों ने अपने नबी के जीवन तथा उनकी मृत्यु के पश्चात अल्लाह के मार्ग में भर पूर जिहाद और संघर्ष किया। अल्लाह तआला ने उनके द्वारा दीन की और दीन के द्वारी उनकी मदद और सुरक्षा की और उन्हें सर्व धर्मों और उनके मानने वालों पर प्रभुत्ता प्रदान किया। अतः उन सहाबा किराम की जीवनियों और उनके महान कार्यों के विषय में उल्लेख करना वर्तमान काल में अनिवार्य हो गया है जिस में बिदअतियों और राफिज़ियों (शी'ओं) की ओर से इस धरती पर जन्मे सर्व श्रेष्ठ लोगों को गाली का निशाना बनाया जाता है।

उनमें प्रथम सूचि पर हिदायत याफ्ता (पथप्रदर्शित) खुलफाए-राशिदीन का नाम आता हैं जिन के विषय में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ्ता (पथप्रदर्शित) ख़ुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो।"** (अहमद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने मसजह)

खुलफा-ए-राशिदीन में सर्व प्रथम अबू बक्र सिद्दीक़, फिर उमर बिन ख़त्ताब, फिर उसमान बिन अफ्फान, फिर अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। इस लेख में दूसरे खलीफा अमीरुल-मोमिनीन उमर फारूक़ रज़ियल्लाह अन्हु का उल्लेख किया जा रहा है।

उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवन की कुछ झलकियाँ

आप का नाम व नसब (वंशावली):

उमर बिन खत्ताब बिन नुफैल बिन अब्दुल-उज़्ज़ा बिन रियाह बिन अब्दुल्लाह बिन कुर्त बिन रज़ाह बिन अदी बिन कअब बिन लुवै बिन ग़ालिब अल-कुरशी अल-अदवी है।

कअब बिन लुवै बिन ग़ालिब में आप का नसब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिल जाता है।

कुन्नियत :

आपकी कुन्नियत 'अबू हफ्स' है।

लक़ब :

आपका लक़ब 'फारूक़' है। क्योंकि जब आप ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया तो मक्का में अपने इस्लाम का खुल्लम खुल्ला एलान किया, जबकि इस से पहले लोग अपने इस्लाम को छुपाते थे। तथा आप मुसलमानों को लेकर दारे-अरक़म से बाहर निकले और मस्जिदे हराम में जाकर खाना कअ्बा के पास स्पष्ट रूप से इबादत की, जब इस से पूर्व लोग छुप-छुपाकर अल्लाह कि इबादत किया करते थे। इस प्राकर अल्लाह तआला ने आप के द्वारा सत्य और असत्स में अन्तर और भेद स्पष्ट कर दिया। अतः आप का लक़ब 'फारूक़' पड़ गया।

आप का जन्म :

आप का जन्म आमुल-फील[१] के १३ वर्ष बाद (अर्थात् हिजरत से ४० वर्ष पूर्व) हुआ।

आप के गुण :

वह अपनी जवानी में शक्ति और सख्ती से प्रसिद्ध थे, अपनी क़ौम के अन्दर उनका एक उच्च्य स्थान था। वह एक महान, बहादुर, बुद्धिमान और न्याय-प्रिय सहाबी थे, तथा उनके शासन काल में बहुत सारी फ़ुतूहात हुईं, तथा वह सर्व प्रथम अमीरूल मोमिनीन की उपाधि से सम्बोधित किए गए।

आप के इस्लाम स्वींकारने की कहानी :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश्दूत बनाए जाने के छठे वर्ष उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में इस्लाम उसी दिन उतर गया था जब उन्हों ने एक रात पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैकि व सल्लम से खाना कअ्बा के पास सूरतुल-हाक़्क़ा की तिलावन सुनी थी। किन्तु अभी उनके अन्दर जाहिली जज़्बात और बाप-दादा के धर्म की महानता के एहसास का छिल्का इता दृढ़ था कि वह उनके दिल में मचलने वाली हक़ीक़त के गूदे पर गालिब रहा। और वह उस छिल्के के भीतर छुपे हुए एहसास की परवाह किए बिन इस्लाम विरोधी संघर्ष में जुटे रहे।

---

[1] इस से अभिप्राय वह वर्ष है जिस में अब्रहा (जो एथोपिया के राजा नजाशी की ओर से यमन का गवर्नर था) मक्का में खाना काबा पर चढ़ाई करने के लिए आया था और अल्लाह तआला ने उसे और उसकी फौज को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। यह ५७१ ई० के प्रथम तिमाही में घटित हुआ।

उनके स्वभाव की कठोरता और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से घोर शत्रुता का हाल था कि एक दिन स्वयं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़िस्सा समाप्त करने की नीयत से तलवार लेकर निकल पड़े। लेकि अभी रास्ते ही में थे कि नुऐम बिन अब्दुल्लाह अदवी से मुलाक़ात हो गई। उसने पूछा : उमर कहाँ का इरादा है? उन्हों ने कहाः मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हत्या करने जा रहा हूँ। उस ने कहा : मुहम्मद की हत्या कर के बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा से कैसे बच सको गे? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : लगता है तुम भी अपना पिछला धर्म छोड़कर अधर्मी हो गए हो? उसने कहा : उमर! एक आशर्य पूर्ण बात न बता दूँ, तुमहारी बहन और बहनोई भी तुम्हारा धर्म छोड़ कर बेदीन हो चुके हैं। यह सुन कर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गुस्से से बे क़ाबू हो गए और सीधे बहन-बहनोई का रूख किया। वहाँ ख़ब्बाब बिन अरत्त उनकी बहन फातिमा और उनके पति सईद बिन ज़ैद को क़ुरआन की शिक्षा दे रहे थे। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आहट सुनते ही खब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु घर के अन्दर छुप गए तथा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन फातिमा ने सहीफा छुपा दिया। लेकिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु घर के निकट पहुँच कर खब्बाब की क़िराअत सुन चुके थे। चुनाँचे उन्हों ने पूछा कि यह कैसी धीमी धीमी सी आवाज़ थी जो तुम लोगों के पास मैं ने सुनी थी? उन्हों ने कहा कुछ नहीं, मात्र हम आपस में बातें कर रहे थे। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : सम्भवतः तुम दोनों बे-दीन हो चुके हो? बहनोई ने कहा : अच्छा उमर! यह बताओ यदि सत्य तुम्हारे दीन के अतिरिक्त किसी अन्य दीन में हो तो? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का इतना सुनना था कि अपने बहनोई पर चढ़ बैठे और उन्हें बुरी तरह कुचल दिया। उनकी बहन ने बढ़ कर उन्हें अपने पति से अलग किया तो बहन को ऐसा चाँटा मारा कि चेहरा खून आलूद हो गया। बहन ने आक्रोश में आकर कहा : उमर! यदि तेरे धर्म के बजाए दूसरा धर्म ही सच्चा हो तो? मैं गवही देती हूँ अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूजा के योग्य नहीं तथा मैं शहादत देती हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़म्बर हैं।

यह सुनकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर मायूसी के बादल छा गए और उन्हें अपने बहन के चेहरे पर खून देख कर आत्म-ग्लानि हुई। कहने लगे : अच्छा यह किताब जो तुम्हारे पास है थोड़ा मुझे भी पढ़ने को दो। बहन ने कहा : तुम नापाक हो, इस किताब को केवल पाक लोग ही छू सकते हैं। उठो स्नान करो। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठ कर स्नान किया फिर किताब लेकर पढ़ी। पढ़ना ही था कि कहने लगे : यह तो बढ़ा अच्छा और सम्मानित कलाम है, **(मुझे मुहम्मद का पता बताओ!)**

ख़ब्बाब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ये शब्द सुनकर बाहर आ गए और कहने लगे : उमर! खुश हो जाओ, मुझे आशा है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुमेरात की रात तुम्हारे संबंध में जो दुआ की थी (कि ‘‘ऐ अल्लाह! उमर बिन खत्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो व्यक्ति तेरे निकट अधिक महबूब है,

उसके द्वारा इस्लाम को शक्ति प्रदान कर।'') यह वही है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुरन्त उन से पूछा : (ऐ ख़ब्बाब! मैं अल्लाह के पैग़म्बर को कहाँ पा सकता हूँ ?) : खब्बाब ने उत्तर दिया :(सफा के पास अरक़म बिन अरक़म के घर में)

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अरक़म के घर गए, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन की ओर निकले और उनके कपड़े और तलवार का परतला समेट कर पकड़ा और कहा : **''उमर! क्या तुम उस समय तक बाज़ नहीं आओ गे जब तक कि अल्लाह तआला तुम पर भी वैसी ही ज़िल्लत और रूसवाई और इब्रतनाक सज़ा उतार न दे जैसी वलीद बिन मुग़ीरह पर उतर चुकी है? ऐ अल्लाह ! यह उमर बिन खत्ताब है। ऐ अल्लाह! उमर बिन खत्ताब के द्वारा इस्लाम को शक्ति और प्रभुत्त्व प्रदान कर।''**

इसके बाद उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : **''मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूजा के योग्य नहीं और निःसन्देह आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं।''**

उनके इस्लाम स्वीकार कर लेने से मक्का में इस्लाम प्रकाश में आ गया; क्योंकि उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, जबकि मुसलमान दारुल अरक़म में थे : ''उस अस्तित्व की सौगन्ध ! जिस ने आप को हक़ के साथ पैग़म्बर बनाकर भेजा है ! आप अवश्य बाहर निकलें गे और हम भी आप के साथ ज़रूर बाहर निकलें गे।

चुनाँचे मुसलमान उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बाहर निकले और मस्जिदे हराम में दाखिल होगए और खाना काबा के पास पहुँचे, कुरैश को उन से छेड-छाड़ करने या उन्हें रोकने का साहस नहीं हुआ। इसी कारण पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका लक़ब 'फारूक़' रख दिया; क्योंकि अल्लाह ने (उनके द्वारा) सत्य और असत्य में अन्तर और भेद स्पष्ट कर दिया।

आप के फज़ाइल (विशेषताएँ) :

- आप उन दस आदमियों में से एक हैं जिन्हें जन्नत की बशारत दी गई है।
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के उलमा और उनके ज़ाहिदों में से थे।
- अल्लाह तआला ने आप की ज़ुबान पर हक़ को जारी कर दिया था, कि क़ुर्आन आप की राय के अनुकूल उतरता था, अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : ''हम क़ुर्आन में उन की बातों में से कोई बात और उनकी रायों में से कोई राय देखते थे।'' जैसाकि अब्दुल्लाह बिन उमर फरमाते हैं : ''लोगों के साथ कोई मामला पेश नहीं आया, जिसके बारे में लोगों ने कोई बात कही और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई अन्य बात कही, मगर क़ुर्आन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बात की अनुरूपता में उतरा।

- आप हक़ के मामले में शक्तिवान् थे, उसके बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत की चिन्ता नहीं करते थे।
- आप की बहादुरी और हैबत का एक दर्शन यह है कि उन्हों ने कुरैश के सामने खुल्लम खुल्ला यह घोषणा कर दी कि वह हिजरत कर रहे हैं, जबकि मुसलमान गुप्त रूप से हिजरत के लिए निकलते थे। आप ने उन्हें ललकारते हुए कहा : **''जो आदमी यह चाहता है कि उसकी माँ उसे गुम पाए, उसके बच्चे यतीम हो जाएँ और उसकी बीवी रांड (विधवा) हो जाए, तो वह मुझ से इस घाटी के पीछे मिले।''** चुनाँचे किसी के अन्दर आप से मुठभेड़ करने की हिम्मत नहीं हुई।
- **(**आकाश में कोई फरिश्ता नहीं है जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सम्मान न करता हो, और धरती में कोई शैतान नहीं है जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से डरता न हो।**)**
- बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''ऐ उमर ! शैतान तुम से भागता है।'' (तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)
- जबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **''अबू बक्र और उमर इस दीन में ऐसे ही हैं जैसे सिर में आँख और कान का स्थान है।''** (इस हदीस को तब्रानी ने रिवायत किया है और अल्बानी ने हसन कहा है।) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **''मेरे बाद दो लोगों : अबू बक्र और उमर का अनुसरण करो।''** (अस्हाबुस्सुनन ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीह कहा है।)

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफतः

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की चाहत एक शक्तिशाली व्यक्तित्व की थी जो उन के बाद ज़िम्मेदारी को संभालने पर शक्तिमान हो, उनका रूजहान उमर बिन खत्ताब की ओर था। उन्हों ने इस बारे में अनेक मुहाजिरीन व अन्सारी सहाबा किराम से परामर्श किया, तो उन्हों ने आप की अच्छी प्रशंसा की। उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया : ''ऐ अल्लाह ! उनके बारे में मेरी जानकारी यह है कि उनका बातिन (प्रोक्ष) उनके ज़ाहिर (प्रत्यक्ष) से श्रेष्ठ है, और हमारे बीच उनके समान कोई नहीं।'' इस परामर्श के आधार पर और मुसलमानों की एकता और अखण्डता की चाहत और उनके हित की सुरक्षा के लिए १३ हि० में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खलीफा चुने गए।

आपकी उपलब्धियाँ :

आप की खिलाफत दस साल जारी रही जिस में ढेर सारे कारनामे अनजाम पाए। इसीलिए इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस पर टिप्पणी करते हुए फरमाते हैं : ''उमर का इस्लाम लाना एक विजय था, और उनकी हिजरत एक मदद थी और उनकी खिलाफत एक रहमत (दया) थी। हम ने देखा है कि एक समय वह था जब हम बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ने की ताक़त नहीं रखते थे यहाँ तक उमर ने इस्लाम स्वीकार कर लिया, जब उमर मुसलमान हो गए तो उन से लड़ाई की यहाँ तक कि उन्हों ने हमें छोड़ दयिा, फिर हम (बैतुल्लाह में) नमाज़ पढ़ने लगे।''

वह सर्व प्रथम व्यक्ति हैं जिन्हों ने १४ हि० में रमज़ान के महीने में क़ियामुल्लैल के लिए लोगों को एकत्र किया।

वह सर्व प्रथम आदमी हैं जो अपने कार्यकाल में रात के समय लोगों की पासबानी में गश्त करते थे और अपनी प्रजा के हालात का निरीक्षण करते थे।

तथा वही ख़िराज को लगाने वाले हैं। तथा उन्हों ने नगर बसाए, क़ाज़ियों को नियुक्त किया, दीवान स्थापित किए और लोगों के वेतन निर्धारित किए। तथा लोगों के साथ लगातार १० हज्ज किए, और अपने अन्तिम हज्ज में उम्महातुल मोमिनीन को भी अपने साथ हज्ज कराया।

उन्हों ने ही सब से पहले मस्जिदे-नबवी में कंकरियाँ डलवाईं, क्योंकि जब लोग सज्दे से अपना सिर उठाते थे तो अपने हाथों को झाड़ते थे, चुनाँचे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कंकरियाँ लाने का आदेश दिया और अक़ीक़ से कंकरियाँ लाई गईं और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म की मस्जिद में बिछा दी गईं।

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वह सर्व प्रथम व्यक्ति हैं जिन्हों ने यहूद को बाहर निकाला और अरब द्वीप से शाम की ओर जिलावतन कर दिया। और नजरान वालों को वहाँ से बाहर निकाल कर कूफा के एक छोर पर बसा दिया।

अल्लाह तआला ने उन्हें उनकी खिलाफत के दौरान दिमश्क़ फिर क़ादेसिय्या पर विजय प्रदान किया, यहाँ तके कि जीत का सिलसिला हिम्स और इसके अतिरिक्त अन्य नगरों तक पहुँच गया। फारिस और रूम के बादशाह और सरकश अरब भी उनके दबाव के सामने घुटने टेक दिए, यहाँ तक कि कुछ लोगों ने कहा है : ''उमर का दुर्रा हज्जाज की तलवार से भी अधिक हैबत वाला था।''

आप की हैबत और नरमी (विनम्रता) :

आप रज़ियल्लाहु अन्हु की हैबत यहाँ तक पहुँची हुई थी कि लोगों ने सहन में बैठना छोड़ दिया, और जब बच्चे खेलते हुए उन्हें देखते तो भाग जाते थे, हालांकि

वह जब्र करने वाले और घमण्डी नहीं थे, बल्कि उनकी हालत खिलाफत के बाद उसी तरह थी जैसे पहले थी, बल्कि उनकी खाकसारी (विनम्रता) और बढ़ गई थी, वह बिना किसी पहरे दार और चौकी दार के अकेले चलते फिरते थे। इस मामले न उन्हें धोके में नहीं डाला और न ही नेमत ने उनके अन्दर घमण्ड पैदा किया।

आपकी शहादत :

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रास्ते में शहादत की कामना करते थे और शहादत का शरफ पाने के लिए अपने पालनहार से दुआ करते थे : (ऐ अल्लाह मुझे अपने रास्ते में शहादत नसीब कर और मुझे अपने पैग़म्बर की नगरी में मृत्यु दे।) एक दिन जबकि वह मस्जिदे नबवी में फज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे, अबू लूलुआ मजूसी (जो कि मुगीरा बिन शोअ्बा का गुलाम था) ने आप की पीठ पर खन्जर से कई वार किए, जिसके कारणवश २३ हि० में बुधवार की रात को आप की शहादत हो गई। आप को अपनी मृत्यु से पहले जब यह पता चला कि आप को खन्जर मारने वाला वह पारसी है तो आप ने अल्लाह की प्रशंसा की कि आप को ऐसे आदमी ने क़त्ल किया जिस ने अल्लाह के लिए एक सज्दा भी नहीं किया था। आप को अल्लाह के पै़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम -और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु- के बग़ल में नबी के हुजरा-शरीफ में दफन किया गया जो आज मदीना में मस्जिदे नबवी में मौजूद है।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com